18

अनन्त पुरस्कार और दण्ड

हमारी समझ में आने वाली सबसे कठिन धारणाओं में से एक है ''अनन्तकाल,'' अर्थात कभी न खत्म होने वाला अस्तित्व। हमारे इस भौतिक संसार में, सब कुछ जिसे हम देख और छू सकते हैं, उसका आरज़्भ हुआ और उसका एक अन्त होगा; इसलिए अनन्तकाल की धारणा को दिमाग़ में लाना बहुत बड़ी बात हो सकती है। क्योंकि अनन्तकाल हमारे अनुभव से परे है, इसको समझना हमारे दिमाग़ के लिए असज़्भव है।

हम परमेश्वर से स्वर्ग के आश्चर्यों सहित मिलने की बात आसानी से मान सकते हैं। यद्यपि हम महसूस करते हैं कि जो कुछ हमने इस छोटे से जीवन में किया, सज़्भवत: उससे अनन्तकाल तक वहां रहने का अधिकार नहीं पाया जा सकता। साथ ही, यह सोचते हुए कि जो कुछ हमने इस छोटे से जीवन में किया, वह कभी न खत्म होने वाले उस दण्ड को पाने के योग्य ठहराने के लिए बुरा नहीं है हम नरक के ज़ौफ़ पर ध्यान कर सकते हैं। हो सकता है कि हम सोचें कि धर्मी व्यक्ति परमेश्वर की कृपा और दया के, उन अधर्मियों से बढ़कर अधिकारी हैं जिन्हें परमेश्वर की ओर से बदला मिलना चाहिए।

कुछ लोग यह सोचकर गलती करते हैं कि अनन्त दण्ड को परमेश्वर के प्रेम, दया, और कृपा से नहीं मिलाया जा सकता। इसलिए, वे अपने ढंग से बाइबल की व्याज़्या करना चाहते हैं ताकि वे उस परमेश्वर के अनुरूप हो जाएं जो सिर्फ प्रेमी दयालु, और धैर्यवान है (1 तीमुथियुस 1:2; 1 यूहन्ना 4:8)। वे परमेश्वर के दूसरे रूप को अनदेखा कर देते हैं: वह क्रोध करने वाला और बदला लेने वाला परमेश्वर भी है।[1] वह अधर्म से घृणा करता (इब्रानियों 1:9), ''कड़ाई'' दिखाता (रोमियों 11:22), और ''भस्म करने वाली आग'' है (इब्रानियों 12:29)। लिखा है, ''इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए, उन पर कड़ाई परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू

उसमें बना रहे; नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा'' (रोमियों 11:22)। इब्रानियों 10:31 कहता है, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना ज़यानक बात है।''

नये नियम में परमेश्वर की दयालुता को पतरस (लूका 22:31, 32), पौलुस (1 तीमुथियुस 1:15, 16), और अन्यों के साथ उसके व्यवहार में चित्रित किया गया है। उसका क्रोध हनन्याह और सफीरा (प्रेरितों 5:1-10) तथा हेरोदेस (प्रेरितों 12:20-23) की मौत में देखा जाता है। परमेश्वर ने इन लोगों के अपराध के कारण इन्हें मारा। आज्ञा न मानने वालों के साथ परमेश्वर के व्यवहार से पता चलता है कि वह भयानक दण्ड देने के योग्य है। जो लोग परमेश्वर को केवल प्रेम करने वाले परमेश्वर के रूप में देखते हैं, वे पाप से उसके गहरे असन्तोष और उसकी इच्छा के आगे न झुकने वालों के लिए उसके दण्ड को अनदेखा करते हैं।

दण्ड का पूर्वदर्शन

हम चाहते हैं कि इस जीवन की खुशियां कभी खत्म न हों, और यह कि पीड़ा का अन्त तुरन्त हो जाए। जो कुछ मन को भाता और आनन्ददायक है, वह दण्ड नहीं है। अपराध का प्रतिकार इसी प्रकार हो सकता है कि जो बातें हमें अप्रिय हों, उन्हें सहें। यदि परमेश्वर कहता है कि वह करेगा तो वह हमें कष्टदायक लगता है, ऐसी ही अपेक्षा होनी चाहिए। परमेश्वर एक पापी मनुष्य को दण्ड और किस प्रकार दे सकता है?

दण्ड किस प्रकार का होगा

जैसा कि हम पहले ही निष्कर्ष निकाल चुके हैं, बाइबल बताती है कि अन्त समय दुष्टों को सदा के लिए दण्ड मिलेगा। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह ''अनन्त दण्ड'' किस प्रकार का होगा (मत्ती 25:46)।

सर्वनाश? कुछ लोग सिखाते हैं कि किसी को भी सदा के लिए दण्ड नहीं मिलेगा। उनका मानना है कि ''अनन्त दण्ड'' का अर्थ है कि आज्ञा न मानने वालों का सर्वनाश और अस्तित्व का समाप्त होना, अनन्त दण्ड होगा। वे इस शिक्षा का आधार उन आयतों को बनाते हैं जो घोषणा करती हैं कि दुष्ट नाश किये जाएंगे या अनन्त के विनाश को पाएंगे (मत्ती 10:28)।

यूनानी शब्द *अपोलुमी (apollumi)*, जिसका अनुवाद मत्ती 10:28 में ''नाश'', हुआ है उसका अनुवाद ''नाश'' (मत्ती 8:25), ''खोना'' (लूका 15:4, 6) भी

हुआ है। मशकें जिनका हवाला यीशु ने मत्ती 9:17 में दिया, नाश हो जानी थी, परन्तु उनका अस्तित्व नहीं मिटना था; और भेड़, सिक्का, और वे पुत्र जो खो *(अपोलुमी)* गये थे, वे मिल गये (लूका 15:6, 9, 24)। यीशु ''खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया'' (लूका 19:10), और उसने वायदा किया कि ''जो अपने प्राण खोता है वह उसे पाएगा'' (मत्ती 10:39)। जो सर्वनाश हो गया हो वह मिल नहीं सकता अथवा उसका उद्धार नहीं हो सकता। किसी भी संक्षिप्त संदर्भ में, शब्द अपोलुमी का अर्थ ''खोना'', ''पतन होना'', ''मरना'', ''नष्ट करना'' है, परन्तु इसका अर्थ ''सर्वनाश होना'' नहीं हो सकता।

दुष्टों को अनन्तकाल के लिए लगातार दण्ड मिलता रहेगा: ''और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, उनको रात-दिन चैन न मिलेगा'' (प्रकाशितवाक्य 14:11)। शैतान, पशु, तथा झूठे भविष्यवक्ता के दण्ड के बारे में भी प्रकाशितवाक्य 20:10 में यही व्याज़्या दी गई है, जिन्हें पहले प्रकाशितवाक्य 19:20 में आग की झील में फेंका गया था। यदि आग की झील उसमें फेंके जाने वालों का सर्वनाश कर देती, तो पशु और वह झूठा भविष्यवक्ता, जिन्हें पहले आग की झील में फेंका गया था तब तक उन्हें जल जाना चाहिए था जब शैतान को एक हज़ार से अधिक वर्ष के बाद इसमें फेंका गया (प्रकाशितवाक्य 20:2, 3)। वे अभी ज़ी आग की झील में थे और ''युगानुयुग रात-दिन'' (प्रकाशितवाक्य 20:10) वहां लगातार कष्ट सहेंगे। जो लोग नई वाचा के अधीन परमेश्वर की कृपा को नकारते हैं, वे उस दण्ड, जो मूसा की व्यवस्था को तोड़ने वालों को मिला, से कहीं अधिक दण्ड के योग्य ठहरेंगे (इब्रानियों 10:29)। क्योंकि मूसा की व्यवस्था को तोड़ने वालों के लिए सबसे भयंकर दण्ड मृत्यु था, इसलिए यह वह दण्ड होगा जो मौत से भी भयानक होगा। वह दण्ड नरक है।

वास्तविक दण्ड? नरक (यूनानी शब्द: गेहन्ना[2]) एक वास्तविक स्थान है जिसका उल्लेख यीशु[3] ने, एक अन्य हवाले, याकूब 3:6 को छोड़कर विशेष रूप से किया। हेडिस, मृतकों के लिए बीच का स्थान, और नरक, वह स्थान है जहां पर दुष्टों को दण्ड मिलेगा, दोनों में स्पष्ट अन्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

शब्द *गेहन्ना* पहले यरूशलेम के दक्षिण की ओर स्थित, हिन्नोन के पुत्रों की घाटी के लिए प्रयुक्त हुआ। यह स्थान परमेश्वर और मनुष्यों के लिए घिनौना और घृणित था क्योंकि मूर्तिपूजकों ने अपने बच्चों को वहां जलाया था।[4] इस प्रकार, यीशु के दिनों में, यह स्थान यरूशलेम के कूड़ा फेंकने की जगह बन गया था। इसमें से बदबू

आती थी, यह कीड़ों से भरा रहता और लगातार आग का धुआं इसमें से निकलता रहता था। यीशु द्वारा शब्द गेहन्ना का उपयोग दुष्टों को दण्ड देने के स्थान की व्याज़्या के लिए बिल्कुल उपयुक्त ढंग से किया गया था।

यीशु ने गेहन्ना की आग का भट्ठी की आग के साथ संकेत दिया (मत्ती 13:42, 50)। यह आग सदा तक रहने वाली है और बुझ नहीं सकती (मत्ती 3:12; 18:8; 25:41, मरकुस 9:48[5])। उसने कहा ''कीड़ा'' नहीं मरेगा। यदि आग और कीड़े लाशों को खा जाते हैं, तो फिर आग बुझ जाती और कीड़े कुछ और खाने के लिए न होने के कारण मर जाते। बेशक यीशु आग और कीड़ों को मूल रूप में विचारने के लिए नहीं चाहता था, उसने उन शब्दों का उपयोग किया जो उस सज़ा के कभी न समाप्त होने का संकेत हैं।

यदि आग वास्तविक नहीं है, तो यीशु ने ''आग'' शब्द को बार-बार क्यों दोहराया? दूसरी ओर, वह आत्माओं को मिलने वाली सज़ा के बारे में भौतिक शब्दों के उपयोग के अतिरिक्त हमें समझ आ सकने वाले ढंग से किस प्रकार वर्णन कर सकता था? शायद इसी प्रकार स्वर्ग की सुन्दरता का वर्णन करने के लिए भौतिक शब्दों के द्वारा समझाया गया। यीशु ने हमें नरक के उस भय को समझाने हेतु सहायता के लिए भौतिक शब्दों का उपयोग करना था।

नरक में किस प्रकार के दण्ड का अनुभव होगा? आज्ञा न मानने वाले लोग क्या अपेक्षा कर सकते हैं?

1. नरक में भेजे जाने वालों को ''चले जाने'' के लिए कहा जाएगा (मत्ती 7:23; देखिए 25:41; लूका 13:27)। वे परमेश्वर से दूर किये जाएंगे।
2. नरक में आने वालों को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर दण्ड दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। इससे यह संकेत मिल सकता है कि परमेश्वर उनकी सहायता के लिए न उनको देखेगा और न ही उनकी सुनेगा।
3. शैतान और उसके दूत, तथा हर दुष्ट जो कभी भी जीवित था, सब नरक में ही होंगे (मत्ती 25:41)।
4. नरक, आग और गन्धक से मिलने वाली यातना का स्थान है (प्रकाशितवाक्य 14:10; देखिए 20:10; 21:8)।
5. नरक में जाने वाले निरन्तर विनाश को सहेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।
6. उन्हें परमेश्वर के अनन्त राज्य में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी

(1 कुरिन्थियों 6:9; गलतियों 5:21)।

7. वे परमेश्वर के प्रकोप को सह रहे होंगे (मत्ती 3:7; देखिए रोमियों 2:5; 5:9; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6)। इसे बिना मिलावट के गिराया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 14:10)।
8. वे बाहर, घोर अन्धियारे में होंगे (मत्ती 8:12; देखिए 22:13; 25:30; 2 पतरस 2:17; यहूदा 13)।
9. वे दोषी ठहरेंगे (मरकुस 16:16; यूहन्ना 5:29; 2 थिस्सलुनीकियों 2:12; 2 पतरस 2:3)।
10. वे विनाश की हालत में होंगे (गलतियों 6:8)।
11. वे परमेश्वर के बदले को सहेंगे (रोमियों 12:19)।

दण्ड भोगने वालों की प्रतिक्रिया असहनीय है; वे क्लेश और संकट में दुख भोग रहे होंगे (रोमियों 2:9)। यीशु ने कहा कि वे रो रहे होंगे और दांत पीस रहे होंगे, जो कि अत्यन्त पीड़ा की स्थिति है (मत्ती 8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28)।

नरक के बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह सब बहुत ही बुरा है; कुछ भी अच्छा नहीं कहा गया है। वहां जाने वाले सदा के लिए हर उस बुरे व्यक्ति, जो कभी हुआ हो और शैतान तथा उसके दूतों के साथ रहेंगे (मत्ती 25:41)। वे कभी भी परमेश्वर के साथ या धर्मियों के साथ नहीं रहेंगे। वे सदा के लिए अन्धेरे में रहेंगे। परमेश्वर, जो कि प्रकाश है वहां नहीं होगा। सूर्य, आकाश गंगा, तारे, और हमारे संसार का कोई भी प्रकाश वहां नहीं होगा। परमेश्वर और इन प्रकाशों के बिना केवल अन्धेरा ही है।

नरक में कौन जाएगा?

हमें बताया गया है कि दण्ड किसको मिलेगा। पौलुस ने उन्हें कठोर चित्त और मन न फिराने वाले हृदय कहा, ''जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते वरन अधर्म को मानते हैं,'' और बुराई करते हैं (रोमियों 2:5, 8, 9)। उसने लिखा कि इनमें वे भी हैं ''जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते...'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। पौलुस ने उन लोगों की सूची दी जो स्वर्ग में नहीं जाएंगे, जिसका अर्थ यह हुआ कि वे नरक में जाएंगे (1 कुरिन्थियों 6:9; देखिए

गलतियों 5:21; इफिसियों 5:5)। उस जीवन को जीने के कारण जो वे जीते हैं, नरक उनका अनन्त घर होगा।

इसमें हैरानी की बात नहीं कि नया नियम भय की बात करता है। पौलुस ने लिखा, ''सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:11)। उसी लकीर में, पतरस ने लिखा, ''और जब कि तुम, हे पिता, कहकर उससे प्रार्थना करते हो जो बिना पक्षपात हर एक के काम के साथ न्याय करता है, तो अपने पर देशी होने का समय भय से बिताओ'' (1 पतरस 1:17)। यीशु ने कहा, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है'' (मत्ती 10:28)। पौलुस ने यह भी लिखा, ''सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर ज़ी डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ'' (फिलिप्पियों 2:12)।

''सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है'' (1 यूहन्ना 4:18), तथा सिद्ध प्रेम से हम आज्ञाकारी बनेंगे (यूहन्ना 14:15, 21; 1 यूहन्ना 5:3)। हमें अपने अन्दर परमेश्वर के प्रेम और भय दोनों को बढ़ने देना चाहिए। परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम हमें उसकी सेवा करने के लिए उसके निकट लाएगा, और परमेश्वर का प्रेम हमें उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए उसका भय सिखाएगा (1 पतरस 1:17)।

जो कुछ भी कहा गया है, वह हमें यह समझने के लिए काफी होना चाहिए कि हम नरक में नहीं जाना चाहते। नरक का नक्शा हमारे लिए तैयार नहीं किया गया, बल्कि शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया गया है। संसार के इतिहास में परेशानी डालने के कारण, शैतान उस अत्यधिक तपते हुए नरक में जाने का अधिकारी है जो परमेश्वर ने उसके लिए बनाया है। परन्तु यदि हम यह कहते हैं तो हमें अहसास होना चाहिए कि जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते बल्कि शैतान के पीछे चलते हैं, वे भी अपने पापों के लिए थोड़ी सी डांट नहीं बल्कि बड़े दण्ड के अधिकारी हैं।

हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य स्वर्ग में पहुंचना और नरक के दण्ड से बचना होना चाहिए। स्वर्ग में छोटे से छोटा स्थान, नरक के बढ़िया से बढ़िया स्थान से भी अच्छा है। यदि नरक में कोई अच्छा स्थान होता तो अनन्तकाल तक उसमें रहने को प्राथमिकता दी जाती। हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीकर और दूसरों को स्वर्ग में जाने के लिए तैयार करके नरक के भय से बच सकते हैं।

स्वर्ग का पूर्वदर्शन

एक उत्सुकतापूर्ण वायदा जो यीशु ने किया ''तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है'' (मत्ती 5:12; लूका 6:23)। हमें जो मसीही हैं, स्वर्ग में एक जीवन की आशा है (इफिसियों 4:4)। जो महिमा में इससे कहीं बढ़कर, एक आशीष है, जो मसीही होने को सार्थक बनाती है। और किसी के पास भी स्वर्ग के बारे में इतने गीत नहीं होंगे या कोई भी अपने भावी घर के लिए इतनी बार नहीं गाता होगा। स्वर्ग की हमारी आशा हमें उन कष्टों और बोझों में से निकालकर आनन्द की ओर ले चलती है जबकि दूसरे लोग दुख और निराशा में पड़कर उन्हीं में रहते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)।

यीशु ने कहा, ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। ऐसा नहीं कि बहुतायत के जीवन में समस्याएं नहीं हैं। पौलुस ने लिखा, ''पर जितने प्रभु यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। जो दुख पौलुस ने सहे उनसे वह यह कहने के योग्य हो गया, ''यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं'' (1 कुरिन्थियों 15:19)। उसने मसीह के लिए अपने दुख उठाने के बारे में लिखा, ''यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाये नहीं जाएंगे तो आओ खाएं-पियें, क्योंकि कल तो हम मर ही जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:32; देखिए यशायाह 22:13)।

नया नियम आगे देखने के लिए हमें बहुत कुछ देता है। पवित्र शास्त्र में स्वर्ग का अर्थ, उद्धार पाये हुए लोगों के अनन्त घर के रूप में बार-बार या विस्तार से नहीं बताया गया परन्तु स्वर्ग की आशिषों की ओर कई बार ध्यान दिलाया गया है।

स्वर्ग में घर के लिए एक मसीही की आशा उसे आनन्द से भर देती है (रोमियों 12:12)। यह उससे उत्तम प्रतिज्ञा है जो पुरानी वाचा में रहने वालों से की गई थी (इब्रानियों 8:6; 10:34)। उन्हें कनान की धरती देने का, लज़्ज़े जीवन और खुशहाली का वायदा दिया गया था यदि वे उस वाचा में बने रहते जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी (व्यवस्थाविवरण 4:13; 5:33)। यदि हमें पृथ्वी पर एक निष्कलंक स्थान का वायदा दिया जाता है, तो हमारी आशा का आधार, उन प्रतिज्ञाओं से उत्तम नहीं होगा जो इस्राएल को दी गईं (व्यवस्थाविवरण 28:1-14)। परन्तु हमारी आशा इस पृथ्वी पर भूमि के एक हिस्से पर समृद्धि और लज़्ज़े जीवन के बजाय स्वर्ग में सदा के लिए एक स्थान है (1 पतरस 1:3, 4)। बेशक इस पृथ्वी पर हम कितनी भी देर तक रहें और

परमेश्वर की आशिषों का आनन्द उठाएं, यह सांसारिक जीवन अस्थायी ही है। बाहर का मनुष्य दिन-ब-दिन नाश होता रहता है (2 कुरिन्थियों 4:16); एक दिन हम में से हर एक मर जाएगा (इब्रानियों 9:27)। उसके बाद इस पृथ्वी पर कोई और जीवन नहीं मिलेगा- न किसी मनुष्य के रूप में, न किसी अन्य जीव के रूप में। इस जीवन के बाद केवल न्याय होना है, या तो उस परमेश्वर के साथ स्वर्ग में जिसकी हमने सेवा की है (देखिए मत्ती 25:34) या अनन्त आग में जो उनके लिए तैयार की गई है जिन्होंने उसकी सेवा से इन्कार किया (देखिए मत्ती 25:41)।

स्वर्ग कैसा है?

जिस प्रकार बाइबल में स्वर्ग का वर्णन किया गया है उसे समझने के लिए, हमें यह महसूस करना आवश्यक है कि ''स्वर्ग'' का उपयोग तीन पृथक क्षेत्रों में किया गया है (2 कुरिन्थियों 12:2-4): (1) आकाश जहां बादल हैं (व्यवस्थाविवरण 11:11) और जहां पक्षी उड़ते हैं (भजन संहिता 79:2), (2) तारों और नक्षत्रों से भरा हुआ सौरमडंल (उत्पत्ति 1:14-18; व्यवस्थाविवरण 1:10), और (3) परमेश्वर का निवास स्थान, जहां पृथ्वी के छुटकारा पाए हुए लोग सदा तक रहेंगे (1 पतरस 1:3, 4)। यह अन्तिम हवाला इस पाठ से जुड़ा हुआ है।

अभिव्यक्ति ''स्वर्ग का राज्य'' का उपयोग: (1) परमेश्वर का अनन्त राज्य (मत्ती 13:43), (2) उद्धार पाए हुओं के लिए तैयार राज्य (मत्ती 25:34) और (3) मसीह का राज्य जिसके निकट होने का उसने प्रचार किया और जिसका प्रचार करने के लिए उसने दूसरों को भेजा, को स बोधित करने के लिए किया गया है। इस राज्य को ''स्वर्ग का राज्य'' (मत्ती 4:17); ''परमेश्वर का राज्य'' (मरकुस 1:15), ''मेरा राज्य'' (लूका 22:30), और उसके ''प्रिय पुत्र का राज्य'' (कुलुस्सियों 1:13) कहकर सञ्बोधित किया गया है। तीनों को एक करने वाला धागा जो इन शब्दों के बीच से होकर इन्हें अर्थ देता है वह इसे स्वर्ग के शासन से सञ्बोधित करता है। मसीह का विशेष शासन, जिसके निकट होने का उसने प्रचार किया (मत्ती 4:17), उसके ऊपर उठाए जाने के साथ आरञ्भ हो गया (इफिसियों 1:19-23) और उसके वापस आने पर समाप्त हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। यह पाठ इस बात पर ज़ोर देगा कि यह वह राज्य है जिसमें उद्धार पाए हुए लोग अपने अनन्त पुरस्कार के रूप में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:34)। केवल संदर्भ ही तय कर सकता है कि हर एक आयत में शब्द के कौन से उपयोग का क्या अर्थ है।

क्योंकि स्वर्ग कोई स्पर्शनीय, भौतिक आकार वाला नहीं है, इसलिए हमें ज्ञात होना चाहिए कि इसके वर्णन के लिए भौतिक शब्दों का प्रयोग केवल इसके उस आत्मिक क्षेत्र की वास्तविकताओं की ओर संकेत ही है। इस क्षेत्र के बारे में पौलुस ने लिखा, ''और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18)। यद्यपि परमेश्वर स्वर्ग का वर्णन पृथ्वी पर रहने वालों के शब्दों में करता है, तो भी इसको भौतिक नहीं समझा जाना चाहिए।

पृथ्वी की मरम्मत नहीं होगी या इसको आत्मिक निवास में नहीं बदला जाएगा। यदि ऐसा होता तो हम उसे गम्भीरता से नहीं लेते जो सिंहासन पर बैठा है, जिसने कहा, ''कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं'' (प्रकाशितवाक्य 21:5)। न ही हम वाक्य ''फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी,...'' (प्रकाशितवाक्य 21:1) का शाब्दिक अर्थ ले सकते थे।

नया यरूशलेम, उद्धार पाए हुए लोगों का नगर, पृथ्वी पर पाई जाने वाली अति मूल्यवान सामग्री से बना बताया गया है (प्रकाशितवाक्य 21:11-21)। ऐसी व्याख्या भयभीत करने वाली, और मानवीय कल्पना से बहुत दूर है। यह वह चित्र है जो परमेश्वर ने हम नाशवानों को देना चाहा। हम उसके राज्य में महिमा पाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 2:12; इब्रानियों 2:10), इसकी चमक और महिमा देखेंगे (रोमियों 8:18), और उस महिमा के भागीदार बनेंगे (1 पतरस 5:1)। ''वह अपने पवित्र लोगों में महिमा'' पाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)। हम भी प्रभावित होंगे कि यह नाश होने वाला राज्य नहीं है, बल्कि इसमें हमें स्वर्ग के नागरिक के रूप में ''बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा'' मिलेगी (2 कुरिन्थियों 4:17)। पृथ्वी की तुलना में, यह ''उत्तम और सर्वदा ठहरने वाली सम्पत्ति'' (इब्रानियों 10:34), ''एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश'' है (इब्रानियों 11:16)।

स्वर्ग का सबसे अधिक आश्चर्यजनक पहलू अनन्तकाल के लिए हमारा परमेश्वर, यीशु, पवित्र आत्मा और उसमें सभी उद्धार पाए हुए लोगों की संगति में रहना होगा जो जीवित थे (प्रकाशितवाक्य 21:3)। पृथ्वी पर किसी भी संगति की तुलना उस अनन्त संगति से नहीं की जा सकती, जो स्वर्ग में हमें मिलेगी।

यदि स्वर्ग की महिमा की ओर एक पल के लिए हम टकटकी लगा सकें और उस संगति को देखें जो हम वहां भोगेंगे व पाएंगे तो हम वहां जाने के लिए बहुत उत्सुक होंगे और जागते हुए हर क्षण उसी के सपनों में व्यतीत करेंगे, उसके लिए काम

करेंगे और योजना बनाएंगे। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)।

स्वर्ग में क्या होगा?

हमें स्वर्ग को समझने में सहायता के लिए प्रतीकों का इस्तेमाल करना पड़ता है। स्वर्ग में वे वस्तुएं नहीं होंगी जिनकी हमें पृथ्वी पर आवश्यकता है, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, दीपक (रौशनी); न ही वहां कोई रात होगी, क्योंकि मेज़ना (यीशु मसीह) वहां स्वयं प्रकाश होगा (प्रकाशितवाक्य 21:23, 25; 22:5)। परमेश्वर के पास पहुंच की हमारी तैयारी का अर्थ होगा कि वहां किसी मन्दिर की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि वहां तो परमेश्वर और मेमना ही मन्दिर होंगे (प्रकाशितवाक्य 21:22)।

हमें भौतिक भोजन की भी आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि जीवन तो वहां जीवन के जल की नदी और जीवन के पेड़ के फल से ही बना होगा और इस कारण, वहां कोई श्राप न होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)। हमारे नये निवास स्थान में केवल धार्मिकता ही होगी (2 पतरस 3:13)।

हम कैसे होंगे?

हमारी शारीरिक देहें आत्मिक देहों में बदल जाएंगी (1 कुरिन्थियों 15:44, 51-54)। जिस आत्मिक आकार में हम प्रवेश करेंगे शारीरिक देहें उसके अयोग्य होंगी, क्योंकि ''मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते'' (1 कुरिन्थियों 15:50)। परमेश्वर का आत्मिक क्षेत्र परमेश्वर के लिए स्वाभाविक है क्योंकि वह आत्मा है (यूहन्ना 4:24), और दूतों के लिए स्वाभाविक क्षेत्र है, क्योंकि वे भी आत्माएं हैं (इब्रानियों 1:14)। हम यह नहीं समझ सकते कि उस आकार में देह कैसी होगी, परन्तु हमें इतना दृढ़ निश्चय है ''कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। हमारे लिए परमेश्वर को देखने के लिए, आवश्यक है कि हम उसके आयाम में प्रवेश करें, क्योंकि शारीरिक प्राणी परमेश्वर को नहीं देख सकते (1 तीमुथियुस 6:16)। यीशु ''हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा'' (फिलिप्पियों 3:20, 21)। ऐसा होने पर हम ''उसका मुंह देखेंगे'' (प्रकाशितवाक्य 22:4), अर्थात उसका चेहरा जिसे शारीरिक आंखों से देखकर हम

में से कोई भी जीवित नहीं रह सकता (निर्गमन 33:20)।

बदल जाने के बाद हमें स्वर्गीय जीवों की महिमा मिलेगी। हम महिमा, आदर और कल्याण में प्रवेश करके (रोमियों 2:7, 10), मसीह के ''साथ महिमा'' (रोमियों 8:17) पाएंगे। अपनी नई स्थिति में हम ''अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे'' (मत्ती 13:43)। ''और जैसे हमने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया, वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:49)।

हम ''अनन्त जीवन'' पाकर अनन्त जीव बन जाएंगे, जो कभी मर नहीं सकेंगे (लूका 20:36; प्रकाशितवाक्य 21:4)। ''अनन्त जीवन'' का अर्थ है कि जीवन के साथ-साथ जीवन की लम्बाई, जिसकी तुलना वर्तमान सम्पत्ति[7] या यीशु पर विश्वास करने और उसकी सेवा करने[8] से मिलने वाले पुरस्कार से की जा सकती है।

हम क्या कर रहे होंगे?

परमेश्वर ने पूरी तरह से और अच्छे कारण से वर्णन कर दिया है कि हम स्वर्ग में क्या कर रहे होंगे। क्योंकि हम शारीरिक हैं, इसलिए हो सकता है कि हम यह जानने को उत्सुक न हों कि आत्मिक जीव क्या करते हैं। क्योंकि हमारी प्रसन्नता आम तौर पर शारीरिक बातों पर आधारित होती है, इसलिए हो सकता है कि स्वर्ग की आत्मिक क्रियाओं से उत्तेजित होने में हमें कठिनाई हो।

स्वर्ग में हमें केवल आनन्द ही मिलेगा क्योंकि परमेश्वर ''उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:4)। जीवन के वे शारीरिक पहलू जिनके कारण हमें कष्ट हुआ या जो हमारे लिए श्राप बने, उनका अस्तित्व बिल्कुल नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)। उद्धार पाए हुए लोग अपने प्रभु के ''आनन्द'' में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:21, 23)। हम इस जीवन के परिश्रमों से विश्राम पाएंगे (प्रकाशितवाक्य 14:13; इब्रानियों 4:8-11)।

अनन्तकाल तक हम आनन्द करेंगे क्योंकि हम पिता के साथ (प्रकाशितवाक्य 21:3), यीशु के साथ (यूहन्ना 12:26[9]), दूतों के साथ (लूका 9:26), और उद्धार पाने वालों के साथ होंगे (मत्ती 13:43)। हम आनन्दपूर्वक यीशु की सेवा करेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:3)और उसके साथ सदा के लिए शासन करेंगे (2 तीमुथियुस 2:12; प्रकाशितवाक्य 22:5)। वह अपने संतों (पवित्र लोगों) में महिमा पाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:10), जिसका अर्थ अवश्य ही यह है कि यीशु उनके द्वारा जिन्हें

उसने उद्धार दिलाया है, बहुत ही आदर पाएगा और उसकी महिमा होगी (फिलिप्पियों 2:10, 11)। स्वर्ग प्रेम, संगति और आनन्द का अद्‌भुत स्थान होगा।

स्वर्ग में कौन जाएगा?

स्वर्ग की महिमा गुणों के आधार पर नहीं, बल्कि कृपा के आधार पर दी जाती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:16)। हम यह डींग मारने के योग्य नहीं होंगे कि हमने अपने अच्छे कर्मों से स्वर्ग को कमाया है (इफिसियों 2:8, 9; तीतुस 3:5)। हम केवल यही कहेंगे, ''कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है'' (लूका 17:10)।

स्वर्ग हमें विरासत के तौर पर दिया जाएगा।[10] विरासत कमाने से नहीं मिलती; यह एक उपहार है। जो वारिस हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं (रोमियों 8:16, 17; गलतियों 3:6, 7, 29)। जल और आत्मा से दोबारा जन्म लेकर (यूहन्ना 3:5), हम परमेश्वर से जन्मे हैं (यूहन्ना 1:12, 13)। इस तरह हम विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की संतान और स्वर्ग के वारिस बनते हैं (गलतियों 3:26, 27)।

जो लोग स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे, ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और अनैतिक जीवन जीते हैं (1 कुरिन्थियों 6:9, 10; गलतियों 5:19-21)। क्योंकि वे यीशु के लोहू के द्वारा धोये नहीं गए हैं इसलिए वे दूषित ही रहेंगे और स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते (प्रकाशितवाक्य 21:27; 2 पतरस 3:13)। जो स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ये वे लोग हैं जो यीशु के लोहू से शुद्ध हो चुके हैं (इफिसियों 5:25-27; कुलुस्सियों 1:19-22)।

सारांश

यह विचार कि परमेश्वर उनको सदा-सदा के लिए दण्ड देगा जिन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी, कितना भयावह है, परन्तु यह शिक्षा तो उसके वचन में है। अधर्मियों के लिए दण्ड भी उतना ही अनन्त होगा जितनी धर्मियों के लिए आशीषें। इस निश्चिंतता से हमें हर काम में परमेश्वर को भाने की प्रेरणा मिलनी चाहिए । स्वर्ग में उसके साथ अनन्तकाल को पा लेने पर शैतान और उसके दूतों को मिलने वाली अनन्त आग से बच जाने पर हर प्रयास, हर कठिनाई, सेवा का हर एक पल सार्थक हो जाएगा।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 244 पर)

1. कोई यह निष्कर्ष निकालता है कि अनन्त दण्ड परमेश्वर के प्रेम, दया और कृपा से मेल नहीं रख सकते। यह निष्कर्ष गलत क्यों है?
2. यह विचार कि आज्ञा न मानने वालों का अस्तित्व मिट जाएगा, गलत शिक्षा क्यों है?
3. नरक में किस प्रकार के दण्ड की अपेक्षा की जा सकती है?
4. पौलुस उनका वर्णन कैसे करता है, जिनको दण्ड मिलेगा?
5. हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य क्या होना चाहिए?
6. मसीह की स्वर्ग की आशा मूसा की व्यवस्था के अधीन दिये गये वायदों से उत्तम कैसे है?
7. ''स्वर्ग'' की किन तीन अर्थों में व्याज़्या की गई है?
8. स्वर्ग में वे वस्तुएं क्यों नहीं होंगी जिनकी हमें इस पृथ्वी पर आवश्यकता है?
9. स्वर्ग में कौन जाएगा?

---

[1]पढ़िये रोमियों 1:18; 2:8; 3:5; 12:19; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8। [2]गेहन्ना एक इब्रानी शब्द का यूनानी लिप्यांतरण है। जो कि दो इब्रानी शब्दों *गे* जिसका अर्थ ''घाटी,'' और *हिन्नोन,* अर्थात घाटी का स्वामी, के मेल से बना है। [3]देखिए मत्ती 5:22, 29, 30; 10:28; 18:9; 23:15, 33; मरकुस 9:43, 45, 47; लूका 12:5; याकूब 3:6। [4]देखिए 2 राजा 23:10; देखिए 2 इतिहास 28:3; 33:6; यिर्मयाह 7:31, 32; 19:6। [5]देखिए मरकुस 9:43; लूका 3:17। [6]अनुवादित शब्द ''सिद्ध'' का यूनानी शब्द *तिलियोस* है, जिसका अर्थ है ''परिपक्व''। [7]देखिए यूहन्ना 3:36; 5:24; 6:47, 54; 1 यूहन्ना 5:11, 13। [8]मत्ती 19:29; मरकुस 10:30; लूका 18:30; यूहन्ना 10:28; रोमियों 2:7; 6:22; 1 तीमुथियुस 6:12। [9]देखिए यूहन्ना 14:3; 17:24; 2 कुरिन्थियों 5:6-8; फिलिप्पियों 1:23; कुलुस्सियों 3:4; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17। [10]देखिए प्रेरितों 20:32; देखिए 26:18; इफिसियों 1:11,14,18; 5:5; कुलुस्सियों 1:12; 3:24; इब्रानियों 9:15; 1 पतरस 1:4.